



माताजी

ऑफिस का काम खत्म करके मालती ने आँखों से चश्मा उतार कर मेज़ पर रखा और रूखे उलझे बालों में उंगलियों को िेरा फक अचानक दरवाज़ा खट-खटाटे हुए फकसी ने आवाज लगाई “ माताजी एक कटोरी आटा दे दो ।” माताजी शब्द ने जैसे मालती को अतीत में पहुँचा फदया । मालती को छोटे से कस्बे में अपना घर, माँ -पपताजी, तीन बड़े भाई – बहनों और मालती को छोटी इलायची का संबोधन करती माताजी की याद ताज़ा हो आई । मालती उस समय कोई छह या सात बरस की रही होगी पर उस े याद है फक उनके पड़ोस म ें रहने वाली माताजी पूरे मोहल्ले की माताजी थी । तीन बच्चे और छोटी- सी कोठरी के लसवा उनका कोई सगा नहीं था । माँ ने बताया था फक भारत- पफकस्तान के बटँ वारे के दौरान दोनों देशों में जगह -जगह काफ़ी खून खराबा हुआ था । सांप्रदालयक दंगों के कारण दोनों देशों की आवाम में हा- हा- कार मचा हुआ था । माताजी जब अन्य- फहंद ू पररवारों की तरह भारत आ रही थी तो जगह -जगह होने वाले सांप्रदालयक दंगों की चपटे में उनका पररवार आ गया और फकसी तरह उन्होंने अपन ेतीनों बच्चों के साथ जान बचा कर फदल्ली लालफकले के ररफ्यूजी कैम्प में शरण ली थी । बाद म ें हालात सामान्य होने पर वह काम की तलाश करते हुए हमारे कस्बे में ही बस गई थी । तब कस्बे के लोगों ने बेवा माताजी और उसके तीनों बच्चों की बहुत मदद की थी । सब उनको माताजी कहकर बुलाते थे और माताजी इस बात का बहुत अहसान मानती थी और पूरे मोहल्ले को अपना पररवार मानती थी । माताजी का सभी लोगों के प्रलत बहुत अपनापन था । मोहल्ले में फकसके घर में कौन मेहमान या ररश्तेदार आएँ हैं , माताजी को सबकी खबर रहती थी । माताजी उनके घर ऐसे अपनेपन से बलतयाने बैठ जाती जैसे वो ररश्तदे ार स्वयं माताजी से ही लमलने आया हो और वे भी माताजी की स्नेहमयी बातें सुनकर अपनापन महसूस करते थ े । मालती जब पहली बार माताजी से लमली थी तो बड़े प्यार से माताजी ने उसे छोटी इलायची... ओ छोटी इलायची....कह कर पकु ारा था । मालती को ये नया नाम फकतना अटपटा लगा था ।संकोचवश वह पहले तो कुछ न कह पाई पर एक

फदन मालती ने नाराज़ होते हुए बोल ही फदया “ ओफ्िो माताजी... मैं छोटी इलायची नहीं हूँ, मेरा नाम मालती है मालती।” छोटी इलायची तो माँ मसाले में डालती है, फिर तुम मझु े छोटी इलायची क्यों कहती हो ? इस बात पर माताजी पहले तो खूब हँसी फिर बोली “अरे सुन तो... जैसे छोटी इलायची छोटी- सी होने के बावजूद अपनी खुशबू चारों ओर पबखेरती है वैसे ही तेरी बातों से माहौल खुशनुमा हो जाता है। तू तो सबकी लाडली बेटा है..... तझु से तो सारे घर की रोनक है। ” मालती को ये जवाब सुनकर अपने पर बड़ा िक्र हुआ और अब तो वह माताजी की तरह खुद ही अपना नया नाम छोटी इलायचीओ छोटी इलायची... कहकर बुदबुदाने लगती। त्योहारों के फदन शुरू होते ही पूरे कस्बे में धूम मच जाती। लोग अपने घर की साज- सज्जा में व्यस्त हो जाते। नवरात्रे, दशहरा से फदवाली तक पूरे कस्बे में खूब रोनक रहती। कई-कई फदन तक मेले लगते रहते। लोग अपने घर और बाहर सुंदर रंग- पबरंग े कागज़ की लफड़ियाँ और चमकीले ररबन को बाँध कर सजाते। फदनभर त्योहारों के गीत बजते रहते। मालती की तरह माताजी को भी दशहरा मेला बहुत अच्छा लगता था। उसे दशहरे मले े में राम और रावण की झाँफकियाँ देखना खूब भाता था और पूजा के बाद बंटने काले चने का प्रसाद जो माताजी मालती को लाकर देती थी उस े खाने का आनंद ही कुछ और होता था। मालती हर रोज़ माताजी से दशहरा मेले की तारीख पछू ती और माताजी भी अपनी उँगलियों पर फदन लगन - लगन कर बताती फक फकतना समय बचा है फिर वह अगला प्रश्न करती “ माताजी इस बार भी मुझे दशहरा का मेला फदखाने ले जाओगी ना ?” और वो रामलीला के पजून वाला काले चने का प्रसाद खखलाओगी ना ?” माताजी हँसकर मालती को गल े लगाकर कहती “ हाँ मेरी छोटी इलायची...जरूर लेकर जाऊँगी और प्रसाद भी खखलाऊँगी।” माताजी बड़े चाव से अपने बच्चों के साथ मालती को भी मेले में ले जाती थीं।

फिर एक फदन पपताजी के तबादल ेका खत आया और पपताजी को सपररवार दूसरे स्टेशन जाना पड़ा। ू जब माताजी को इस बारे में पता चला तो पहले तो वह तबादला रुकवाने की हठ करने लगी पर माँ के असमथतथ ा जताने पर वह बड़े लाड़ से अपनी छोटी इलायची को गले लगाकर बोली “ नई जगह पर जा रहे हो, खूब घूमना- फिरना, नए - नए लोगों से लमलना पर माताजी को मत भूल जाना। माताजी तुम को रोज़ याद करेगी...है ना छोटी इलायची है ना..” बोलते- बोलते माताजी का गला भर आया, और चुपके से अपने आँचल से आँखें पोंछते हुए माँ से बोली “चल थोड़ा सामान बंधवा दँ ...। ू ” मालती....मालती... क्या हुआ तुम कोई जवाब नहीं दे रही हो ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना ? दोपहर से कब रात हो गई मालती को पता ही न चला अचानक अपने कंध े पर सशु ील के हाथ का स्पश थ पाकर जैसे मालती सपने से हडबड़ा कर जाग गई हो और धीरे- से माताजी बोलते हुए मुस्करा कर चल पड़ी।

मधु चौहान
फहंदी अध्यापका
एलमटी इंटरनैशनल
स्कूल